UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654

नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक वर्ष : 10, अंक : 2, दिसंबर 2022

भारतीय प्रागैतिहासिक प्रमुख क्षेत्रों में शैलचित्रों के माध्यम एवं तकनीकी पक्ष

धर्मवीर सिंह

शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

Paper received on : September 6, September 13, October 14, Accepted on October 17, 2022

सार-संक्षेप

कला के साथ मानव का प्रागैतिहासिक युग से ही गहरा नाता रहा है। शैल चित्र प्राचीनतम कला शैली है, जिसमें मानव प्राकृतिक पाषाणों पर चित्रकारी करते थे। उस समय के आदिमानव ने उपयुक्त जलवायु तथा जीवन निर्वाह की उचित सुविधाओं को देखते हुए पर्वतों की प्राकृतिक गुफाओं तथा वृक्षों की छाँव में अपना जीवनयापन किया। वहाँ पर उन्होंने अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए विविध माध्यम और तकनीकों का उपयोग करके शैल चित्रों का निर्माण किया। तात्कालीन प्रागैतिहासिक शैल चित्र अपने आप को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते है कि उस समय के कलाकार बहुत ही कम साधनों के उपरांत भी इन पहाड़ो पर अंकित कर एक कलात्मक संसार रचा था। प्रस्तुत शोध-पत्र को गुणात्मक विधि द्वारा संपन्न किया गया है तथा माध्यमिक स्रोतों को आधार बनाया गया है। इसमें हम विभिन्न राज्यों के प्रमुख क्षेत्रों के शैल चित्रों का कलात्मक अध्ययन किया गया है। जिससे उस समय के आदिमानव द्वारा शिकार करने की विधि तथा उनके दैनिक जीवन जीने के तरीके के बारे में पता चलता है। ये केवल शैल चित्र ही न रहकर मानव जीवन के विकास के साधन के रूप में अपने आप को प्रमाणित करते है। आदिमानव ने रेखाओं को विभिन्न रूपों तथा उपलब्ध रंगों के द्वारा अनेक प्रतीकात्मक शैल चित्रों को निर्मित किया। इससे हमें उस समय के सांस्कृतिक विरासत तथा उनके आध्यात्मिक रूप का पता चलता है। इन शैल चित्रों को ऐतिहासिक ब्योरा / रिकॉर्ड के रूप में संरक्षित रखा जा सकता है।

मूल शब्द–प्रागैतिहासिक, शैल चित्र, प्रतीकात्मक, माध्यम, तकनीक।

शोध-पत्र

प्रागैतिहासिक काल का अर्थ होता है कि मानवीय घटनाओं से संबंधित प्राप्त लेखों से पूर्व का समय।[1] जिस काल का कोई लिखित विवरण या दस्तावेज उपलब्ध नहीं होता उसे हम प्रागैतिहासिक काल के रूप में पहचानते हैं। आदिमानव के अंदर सर्जनशीलता कितनी गहनता से व्याप्त है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण हमारे प्राचीनतम शैल चित्र हैं। प्रागैतिहासिक काल का आरंभ आखेटक संस्कृति से हुआ है। अध्ययन की दृष्टि से हम प्रागैतिहासिक काल को तीन वर्गों में विभाजित करते हैं–

1. पूर्व पाषाण युग–ये अग्नि के प्रयोग से अपरिचित होने के कारण अपने भोजन के लिए कच्चा मास का उपयोग करते थे।[2] इसका समय 30, 000 ईसा पूर्व से 25, 000 ईसा पूर्व तक माना गया है, यह आखेटक संस्कृति पर आधारित था। इनका व्यवहार पशुओं के समान था तथा ये अपने आपको सुरक्षित रखने तथा अपनी भूख जैसी प्राथमिक आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए भटकता रहता था।

2. मध्य पाषाण युग–इसका समय 25, 000 ईसा पूर्व से 10, 000 ईसा पूर्व तक माना जाता है। यह युग भोजन संग्रह तथा पशु चारण से संबंधित था। इस समय आदिमानव अपने औजारों को ज्यामितीय तथा सुडोल रूप में प्रदान करने लगे थे, तथा मिट्टी के बर्तन बनाने में भी प्रयासरत थे।[3]

3. उत्तर पाषाण युग– इसका समय 10, 000 ईसा पूर्व से 5, 000 / 3, 000 ईसा पूर्व तक माना जाता है इस समय कृषि व्यवस्था का आरंभ हो गया था, जो स्थाई निवास की ओर संकेत करती है। इस समय आदिमानव पत्थर के औजारों के ऊपर पॉलिश करने लग गया था तथा चाक पर बने मृदभांड का प्रयोग करने लगा था। कुछ क्षेत्र में हमें हिरोंज के टुकड़े सील और पत्थर पर प्राप्त हुए जिस पर हिरोंज को पीसकर तैयार किया जाता था। इससे यह प्रमाणित होता है कि हिरोंज का रंग के रूप में भी उपयोग होता था।

मानव एक सर्जनशील प्राणी है, उन्होंने अपनी मूक भावनाओं को अनगढ़ पत्थरों पर नुकीले पत्थर तथा लकड़ी की तुलीका के माध्यम से टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं द्वारा चट्टानों एवं गुफाओं में शैल चित्र अंकित किए, इस समय के मानव ने पाषाण का उपयोग ज्यादा मात्रा में किया जिससे विद्वानों ने इसको पाषाण युग कहकर पुकारा। मनुष्य के अंदर सर्जनशीलता कितनी गहनता से व्याप्त है, इसका एक श्रेष्ठ प्रमाण हमारे प्रागैतिहासिक शैल चित्र हैं, क्योंकि उस समय के आदिमानव के पास सीमित साधन होते हुए भी उन्होंने अपने सर्जनशीलता को इन्हीं शैल चित्र के माध्यम से कायम रखा। इन शैल चित्रों का आरंभिक समय उत्तर पाषाण युग से माना जाता है। इस युग के मानव ने खेती करना शुरू करके स्थाई रूप से बस्तियों

में रहना आरम्भ कर दिया था। संपूर्ण विश्व को भारत के प्रागैतिहासिक चित्रों की ओर ध्यान आकर्षित करने का श्रेय अंग्रेजों को जाता है, सर्वप्रथम सन् 1880 ई. में आर्चिवाल कार्लाइल ने मिर्जापुर की पहाड़ियों में घोड्मंगर नामक स्थान पर शैल चित्रों की खोज का श्रेय जाता है। इसके कुछ वर्षों बाद 14 मार्च सन् 1883 ई. में जॉन काकबर्न ने विजयगढ़ दुर्ग के पास हरनी हरण गुफा के शैलचित्रों की खोज कर इनको ऐतिहासिक रूप प्रदान किया।

भारतीय प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की प्राप्ति स्थल अनेक राज्यों से हैं। यहाँ प्रमुख राज्य के कुछ चुनिंदा क्षेत्रों का वर्णन करेंगे, जैसे–

उत्तर प्रदेश के प्रमुख क्षेत्र

मिर्जापुर–इस क्षेत्र को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय आर्चिवाल कार्लाइल तथा जॉन काकबर्न को जाता है। यह मिर्जापुर जिले से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर एक विंध्या पर्वत माला में स्थित है। इसी पर्वत माला की कैमूर श्रृंखला में सोन नदी घाटी में 100 से भी ज्यादा चित्रित गुफाएं प्राप्त हुई हैं,[4] जिनमें अनेक शैल चित्र प्राप्त हैं।

लिखुनिया–यह कैमूर पर्वत श्रृंखला की एक छोटी पहाड़ी के पास गरई नदी के नजदीक एक प्राकृत निर्मित गुफा है, जिसमें नृत्य करने में मस्त व्यक्तियों का समूह, पालतू हथिनी की सहायता से जंगली हाथी को पकड़ने का दृश्य अंकित है। यहाँ के शैल चित्र गुफाओं की दीवारों छत्तों तथा फर्शो पर अंकित है।[5]

सोरहोघाट–इस चित्र में सबसे सुप्रसिद्ध चित्र 'सूअर के आखेट' का है जो गेरू रंग में अंकित किया गया है इसका चित्रण अत्यंत मार्मिक तथा यथार्थ रूप में हुआ है। इस शैल चित्र में सूअर के मुख से दुख भरी पीड़ा की अभिव्यक्ति हो रही है, इस शैल चित्र के अतिरिक्त यहाँ पर हाथ के छापे तथा शाही के आखेट के शैलचित्र भी प्राप्त हुए हैं।

मानिकपुर–यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के बांदा जिले के अंतर्गत आता है, यहाँ सरहट, करियाकुंड तथा कर्परिया इत्यादि स्थानों पर अनेक शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। जहाँ एक क्षेत्र में एक चोंचदार पुरुष को सुसज्जित द्वार पर बैठा हुआ दर्शाया है, ऐसा लगता है मानो यहाँ कोई तंत्र मंत्र की शाला हो। इसके अतिरिक्त यहाँ पर तीन घोड़ों का चित्रण पाया गया है, जिसे गेरू रंग द्वारा ओजपूर्ण रूप प्रदान किया गया है।

घोडमंगर–यह क्षेत्र मिर्जापुर जिले के विजयगढ़ दुर्ग के नजदीक घोडमंगर नामक स्थल पर है, जहाँ पर एक गैंडे का शिकार का सुप्रसिद्ध चित्र विद्यमान है जिसका अंकन गेरू रंग में हुआ है।

मध्य प्रदेश के प्रमुख क्षेत्र

पंचमढ़ी–यह स्थान मध्य प्रदेश राज्य की महादेव पर्वत श्रृंखला में स्थित है। इस स्थल के आस-पास से 5 मील के घेरे में लगभग 50 प्राकृत गुफाएँ हैं।[6] इसको सन 1936 ई. में 'डी. एच. गार्डन' नामक प्रसिद्ध विद्वान इन गुफाओं को लोगों के सामने प्रकाश में लाए थे। यहाँ पर सांभर के आखेट के दृश्य तथा 'महादेव बाजार' के विशालकाय बकरी का चित्र प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त यहाँ पर लरकरिया, बनियाबेरी, झलाई, सोनभद्र, जंबूद्वीप, निंबू भोज तथा महादेव इत्यादि अनेक स्थलों पर गुफाओं में अनेक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। यहाँ के चित्रों को अध्ययन की दृष्टि से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

- प्रथम स्तर में आकृतियों को तख्तीनुमा तथा डमरूनुमा बनाया गया है।
- द्वितीय स्तर पर आकृतियों के रूप विन्यास बेडोल तथा असंतुलित बनाया गया है।
- तृतीय स्तर पर आकृतियाँ स्वभाविक बनी है, इसमें सामाजिक तथा घरेलू जीवन के दृश्य अंकित हुए हैं।

जैसे–शहद इकट्ठा करते हुए, आखेट के लिए जाते हुए, वाद्य यंत्रों को बजाते हुए इत्यादि शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।

पहाड़गढ़–यह स्थान मध्य प्रदेश के मोरेना जिले के ग्वालियर से 150 किलोमीटर दूर है। जहाँ पर मानव आकृतियों को हाथी पर सवार, तीर, भालों तथा धनुष से युक्त शैलचित्रों में दर्शाया गया है। यह गुफाएँ मधुमक्खियों के छत्ते से भरी हुई हैं।

भीमबेटका–यह मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से दक्षिण की ओर 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, सन 1957 / 1958 ई. में इसकी खोज प्रोफेसर विष्णु श्रीधर वाकणकर ने की थी।[7] जो उज्जैन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे। यहाँ लगभग 600 प्राकृत गुफाएँ प्राप्त हुई हैं। इनमें से लगभग 275 गुफाओं में चित्र विद्यमान हैं और 325 गुफाओं में वर्तमान समय में चित्र विद्यमान नहीं हैं। इन चित्रों का अध्ययन करने के लिए इनको हम दो भागों में बाँटते हैं–प्रथम स्तर के शैलचित्रों में आखेट के दृश्य अंकित हैं।

- द्वितीय स्तर के मानव को जानवर के साथ दोस्तों के रूप में दर्शाया गया है।

होशंगाबाद–यह पंचमढ़ी से 45 मील की दूरी पर स्थित है, जो प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का प्रमुख स्थल है। जहाँ आदमगढ़ पहाड़ियों पर अनेक गुफाएँ हैं। यहाँ पर अस्त्रधारी घुड़सवार, हाथी सवार, घोड़े तथा जंगली भैंसे का शैलचित्र अंकित पाए गए हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर जिराफ समूह, चार धर्नुधारी का चित्र भी क्षेपांकन पद्धति में निर्मित हैं।

मंदसौर–यह स्थल मध्य प्रदेश राज्य के मंदसौर जिले में एक मोरी नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ लगभग 30 प्राकृत गुफाएँ पाई गई हैं, जिनमें अनेक शैलचित्र उपस्थित हैं। इसमें ज्यादात्तर प्रतीकात्मक चित्र विद्यमान हैं, जैसे स्वास्तिक, चक्र, सूर्य, कमल, पीपल के पत्ते तथा अष्टदल इत्यादि यहाँ विश्व प्रसिद्ध 'देहाती बांस की गाड़ी' भी प्राप्त हुई है।

छत्तीसगढ़ के प्रागैतिहासिक शैल चित्र

सिंघनपुर–छत्तीसगढ़ राज्य के सिंघनपुर स्थान पर अनेक प्राकृत गुफाएँ प्राप्त हुई है। यह 'माठ नदी' के पूर्व की ओर स्थित है। पहले यह मध्य प्रदेश राज्य का भाग होता था, लेकिन अब छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत

आता है। सर्वप्रथम इन शैल चित्रों की खोज 1910 ई. में हुई, इसकी खोज का श्रेय 'डब्लू. एंडर्सन महोदय' को जाता है। [8] 1913 ई. में 'अमरनाथ' ने भी इन शैल चित्रों पर अपने लेख लिखें, तत्पश्चात 1917 ई. में 'पर्सी ब्राउन' ने भी इन चित्रों का परिचय दिया। यहाँ लगभग 50 चित्रित प्राकृत गुफाएँ हैं। यहाँ एक गुफा के द्वार पर कंगारू का चित्र अंकित है, इसके अलावा यहाँ पर सूंड उठाए हाथी, खरगोश, सांड, हिरण, भैसा तथा घोड़े के सजीव शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। यहाँ प्रमुख चित्र घायल भैसा जो बुरी तरह से तीरों से बिंधा हुआ है, और दम तोड़ रहा है, जिसके चारों तरफ भाले लिए शिकारी दल हैं।

रायगढ़—यह कबरा पहाड़ी के समीप सिंघनपुर गाँव के पास विद्यमान है, इसके पास बौतलदा की बड़ी गुफा है। जिसमें छिपकली, जंगली भैंसा तथा हिरण के शैलचित्र विद्यमान हैं। इनको गेरू एवं रामरज रंगों में अंकन किया गया है।

राजस्थान के प्रागैतिहासिक शैल चित्र

अलनिया—राजस्थान सदैव सांस्कृतिक दृष्टि से समर्द्ध रहा है, माना जाता है कि पहले यहाँ सरस्वती नदी बहती थी। राजस्थान राज्य के कोटा जिले में अलनिया नदी घाटी में प्राकृत गुफाओं में अनेक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। इनका समय लगभग 5000 वर्ष ईसा पूर्व का माना जाता है। इन प्राकृतिक गुफाओं को वहाँ के लोग सीता जी के मांडणा के नाम से संबोधित करते हैं। जहाँ शेर, हिरण, बकरी, गाय तथा जंगली सांड के दृश्य प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा राजस्थान में भरतपुर तथा झालावाड़ इत्यादि क्षेत्रों में भी शैल चित्र प्राप्त हुए हैं।

बिहार के प्रागैतिहासिक शैल चित्र

यहाँ शाहबाद तथा चक्रधरपुर इत्यादि स्थानों पर शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। यहा पर मानव को पशुओं पर विजय प्राप्त करके अपने आपको गर्व महसूस होते हुए दर्शाया हैं।

शैल चित्रों के माध्यम एवं तकनीक

मानव अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए शैल चित्रों का सहारा लिया जिनका निर्माण विविध माध्यम और तकनीको द्वारा किया। जिस प्रकार संगीतकार अपने संगीत के लिए स्वर का उपयोग कर संगीत करता है, कवि अपनी रचना को लिखने के लिए शब्दों का उपयोग करके अपनी रचना को लिखता है, ठीक उसी प्रकार चित्रकार अपनी कलाकृतियों को निर्मित करने के लिए रंग और रेखाओं का उपयोग करता है। जिसका निर्माण करके अपने आंतरिक भावों को अभिव्यक्त करता है। उस युग के आदिमानव अपने मनोभाव को अभिव्यक्त के शैल चित्रों को निर्मित करते थे, जो विभिन्न माध्यम एवं तकनीकों के द्वारा बनाए गए।

- ❖ माध्यम से हमारा अभिप्राय उन सभी सामग्री तथा उपकरणों से है। जिनकी सहायता से चित्र को निर्मित किया जाता है, जैसे—पाषाण, कागज, गोंद, सरेश, पशुओं कि चर्बी, रंग तथा तुलिका, इत्यादि।
- ❖ तकनीक से हमारा अभिप्राय चित्र को निर्मित करने की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया से है, जैसे फ्रेस्को तथा टेम्परा तकनीक इत्यादि। इन विभिन्न तकनीको में चित्रण कार्य करने के अपने अलग-अलग नियम होते हैं।

माध्यम—द्रश्य कलाओं में जिन साधनों का सदुपयोग करके कलाकार अपनी कलाकृतियों का निर्माण करता है, वह माध्यम कहलाता है, जैसे रंग, तुलिका तथा पत्थर इत्यादि। हर माध्यम की अपनी विशेषता होती है जो चित्र में अपना विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करता है। उस समय के आदिमानव ने जो सहज रूप से प्राप्त हुए पर्याप्त साधन जैसे गैरू, रामराज, खड़िया तथा काजल इत्यादि रंगों को माध्यमों के रूप में उपयोग करके शैल चित्रों का निर्माण करता था। [9] विभिन्न खनिज पदार्थों से रंग की विभिन्न रंगतों से प्राप्त होती थी जैसे—

	खनिज	**रंगत**
1.	गेरू	लाल
2.	खड़िया	सफेद
3.	रामराज	पीला

विभिन्न खनिजों को कूट कर और पीस कर फिर इन रंगतो को प्राप्त किया जाता था, और जब चित्रण करते समय इन रंगों में पशुओं की चर्बी को बंधक के रूप में मिलाकर शैल चित्रों में रंग भरकर उसमें प्राण प्रदान किए जाते थे। मुख्य रूप से आखेटक चित्रों में गेरू रंग का ज्यादा प्रयोग हुआ था। कई स्थलों पर चट्टानों के ऊपर सफेद या लाल रंग की पृष्ठभूमि बनाकर अन्य रंगों से शैल चित्र तैयार किए जाते थे। इन चित्रों को बनाने के लिए तूलिका (मोटी तथा पतली) या दातुन जैसी आकार की टहनी को काटकर और आगे से उसको कूटकर तुलिका तैयार करते थे। कई स्थलों पर हाथ की उँगलियों का उपयोग कर शिलाचित्रों को निर्मित किया गया था। इन शैल चित्रों के लिए सुगमता से प्राप्त खनिज रंगों का प्रधानता से प्रयोग किया गया तथा काला रंग के लिए कोयला का प्रयोग किया गया, जो रासायनिक रंग की श्रेणी में आता है।

तकनीक—कलाकार विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करके अपनी कलाकृतियों को निर्मित करने में जिस सुव्यवस्थित प्रक्रिया का प्रयोग करता है, वह तकनीक कहलाती है। चित्र में किसी भी माध्यम का उपयोग से पहले उसको निर्मित करने की तकनीक का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है, जिससे कलाकार अपने विचारों को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से प्रभावशाली रूप से व्यक्त कर सकें। आकृतियों के धरातल पर सपाट रंग लगाया जाता था। आकृतियों की सीमा अधिकतर नुकीले पत्थर से खोद कर बनाए जाते थे। जिसके कारण वर्तमान समय में भी स्थाई बने हुए है। सामान्यतः दो-तीन रेखाओं द्वारा ही मानव आकृतियों को निर्मित कर दिया जाता था। ज्यादातर आकृतियों में ज्यामितीय रेखा, सीधी रेखा, वक्र रेखाओं का प्रयोग करके त्रिभुज, आयताकार, वृत्त, षटकोण, तथा स्वस्तिक आकारों का प्रयोग करके प्रतीकात्मक रूप प्रधान किए। इनके माध्यम से प्रकृति की विभिन्न शक्तियों के प्रति अपने विश्वास को अभिव्यक्त करते थे। इनके चित्र भद्दे तथा कठोर होते थे।

डॉ. जगदीश गुप्त कि प्रसिद्ध पुस्तक प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला के अनुसार कुछ सुपरिचित परंपरागत चित्रण तकनीक हैं, जिनके प्रयोग से प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का निर्माण हुआ है। ये इस प्रकार है, जैसे–

1. उत्कीर्ण-चित्र–इस तकनीक में किसी पत्थर पर किसी नुकीले उपकरण की सहायता से खुदाई करके चित्र निर्मित किया जाता है, उसे उत्कीर्ण चित्र कहते हैं, ऐसे अनेक प्रागैतिहासिक कालीन शिला चित्र प्राप्त हुए हैं।

चित्र संख्या -1

2. कर्षण-चित्र–इस तकनीक में किसी चट्टान को रगड़ने या खरोचने से चित्र को निर्मित किया जाता है, वह कर्षण चित्र कहलाता है, इस शैली के भी अनेक प्रागैतिहासिक कालीन शिलाचित्र वर्तमान समय में भी विद्यमान हैं। बेलारी तथा कुप्पगल्लू नामक प्राकृत निर्मित गुफाएँ जो दक्षिण भारत में स्थित हैं, जहाँ पर 'धनुष श्रग वृषभ' नामक शैल चित्र मिला है, जो कर्षण तकनीक से निर्मित किया गया है।

चित्र संख्या -2

3. तक्षण-चित्र–इस तकनीक में शिलाचित्र को किसी उपकरण द्वारा काट छाँट कर चित्र को उभार दिया गया होता है, वह तक्षण चित्र कहलाता है, इस तकनीक के भी प्रागैतिहासिक कालीन अनेक शैल चित्र देखने को मिलते हैं। राजस्थान प्रदेश के कोटा जिले रावतभाटा के पास श्रीपुरा गाँव में हजारो वर्ष प्राचीन डायनोसोर का शैल चित्र प्राप्त हुआ है।

4. क्षेपांकन-चित्र–इसमें शैलचित्र के मध्य में चित्रण सामग्री को रखकर और उस शैलचित्र के बाहरी भाग में रंग लगाकर ऊसको उभार दिया जाता है, शैलचित्र में बिना रंग लगाए भी वह पूर्ण लगता है।[10] मिर्जापुर क्षेत्र में इस तकनीक के अनेक शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के कोरबा जिले के बरहाझरिया की एक प्रमुख प्राकृतिक गुफा में हाथ की छापे इसी क्षेपांकन पद्धति में बनी है। यह तात्कालीन समय की सबसे उत्तम तकनीक थी।

5. पूरक चित्र–इस तकनीक में शैल चित्रों के अंदर केवल एक रंग की रंगत के माध्यम से उस चित्र को रूप से पूर्ण कर दिया जाता है। प्रागैतिहासिक शैलचित्रों का विस्तृत रूप से अध्ययन करने के उपरान्त यह पता चलता है, कि इस पद्धति या तकनीक के चित्र सबसे अधिक निर्मित हुए हैं। इन शैल चित्रों में बाहरी आकार की मुख्यता रहती है। क्योंकि बाहरी रेखा से चित्र को आकार प्राप्त होता है। इस तकनीक में ज्यादातर गेरू रंग का उपयोग हुआ है। अनुमान लगाया जाता है कि तात्कालिक समय में चित्रण कार्य के लिए अधिक साधन उपलब्ध नहीं होते थे। इसलिए इस तकनीक का प्रयोग किया होगा। क्योंकि इसमें ज्यादा रंगों की जरूरत नहीं होती है। भीमबैठका की गुफाओ में इस प्रकार के शैल चित्र देखने को मिलते है।

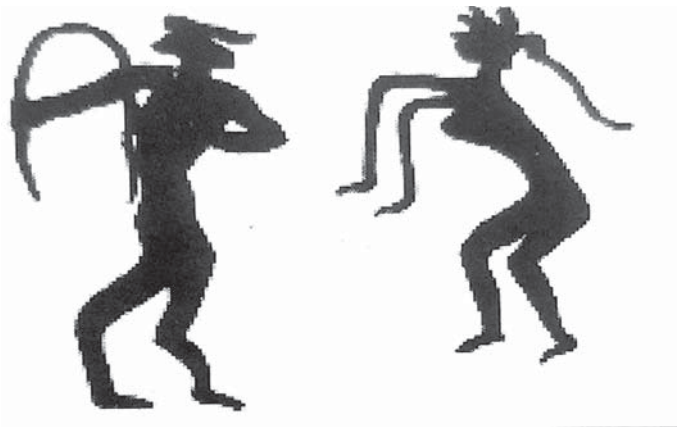

चित्र संख्या -3

6. अर्धपूरक चित्र–यह पूरक तकनीक शैली का एक का ही एक हिस्सा कहा जा सकता है। इस तकनीक के अनुसार शैलचित्रों में पूर्ण हिस्से में रंग से पूर्ण न करके बल्कि उसके किसी एक या दो भाग या अंश को खाली छोड़ देते हैं। वह अर्ध पूरक तकनीक है। इस तरह के चित्र भीमबैठका कि गुफाओं में देखने को मिलते हैं।

चित्र संख्या -4

7. रेखा चित्र—कला तत्वों के अनुसार भारतीय चित्रकला में 'रेखा' तत्व का सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। भारतीय प्रागैतिहासिक शैलचित्रों में अत्यधिक बार शैलचित्रों का निर्माण रेखांकन के द्वारा ही हुआ है। यहाँ पर रेखा का ज्यादात्तर उपयोग किया गया है। जिससे उसको विशेष महत्ता प्राप्त हुई है। किसी शैल चित्र का निर्मित करने में रेखा का बहुत महत्व होता है। इसमें कल्पनाओं का समावेश अति आवश्यक है। चित्र का बाहरी आकार रेखाओं के द्वारा ही किसी आकृति को रूप प्रदान होता है। मिर्जापुर की कोहबर नामक गुफा में इस तकनीक के चित्र देखने को मिलते हैं।

शोध निष्कर्ष

प्रागैतिहासिक शैलचित्रों में कला तत्व 'रेखा' का महत्व सबसे ज्यादा है। उन्होंने विभिन्न रेखाओं का उपयोग करके प्रकृति की शक्तियों के प्रति उनकी श्रद्धा भावना को स्पष्ट किया है। उस समय का आदिमानव ने वन्य जीवन से संघर्ष करता हुआ तथा अपनी भूख और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए प्राकृत गुफाओं की शरण ले ली तथा अपने मन में उत्पन्न होने वाले विचारों को व्यक्त करने के लिए गुफाओं पर रेखांकन आरंभ करके शैलचित्रों का निर्माण किया है, जिससे अपने विचार दूसरों तक भेजने में भी सफल रहा है। उनके द्वारा निर्मित किए गए शैलचित्रों के द्वारा हमें उनके बारे में सुख-दुख तथा उनके जीवन के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होता है। अगर ये शैलचित्र नहीं होते तो आज हम उनके बारे में समझ नहीं पाते। आदिमानव को अपने शैलचित्र निर्माण में जो आसानी से चित्र निर्माण की जो सामग्री उपलब्ध हुई है, उसी को माध्यम के रूप में अपना कर तात्कालीन चित्रण तकनीक के द्वारा उन्हें अपने शैलचित्र बनाएँ। पत्थर की चट्टानों को उन्होंने अपना चित्रतल बनाया। जिसको हम आज ऐतिहासिक रूप से ब्योरे / रिकॉर्ड के तौर पर रख सकते हैं। जिनसे पता चलता है कि उस समय का मानव भी कितना सर्जनशील था।

आदिमानव में मुख्य रूप से दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ पाई गई थी—

1. अपने आस-पास की सांसारिक यादगार तथा उस पर अपनी विजय का इतिहास बनाए रखना।
2. अपनी अमूर्त भावना को मूर्त रूप देना, इसमें जादू, टोना तथा टोटका इत्यादि सम्मिलित हैं।

संक्षेप में अगर कहा जाए तो यह दोनों मनोवृत्तियाँ समस्त मानव जाति के विकास का मूल आधार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. साखलकर, रत्नाकर विनायक, कला कोश, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, सातवां संस्करणः 2019, पृ. सं. 128
2. कुमार, संजीव, प्राचीन भारत, लुसेंट पब्लिकेशन, पटना, द्वितीय संस्करणः 2015, पृ. सं. 28
3. वसिम, एम, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा चित्रकला, उपकार प्रकाशन, आगरा-2, पृ. सं. 55
4. वसीम, एम, उपकार प्रवक्ता भर्ती परीक्षा कला, उपकार प्रकाशन, आगरा-2, पृष्ठ सं. 5
5. प्रताप, रीता (वैश्य), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 37वां संस्करण, 2022, पृ. सं. 23
6. व्यास. राजेश कुमार, 'भारतीय कला' राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण 2020, पृ. सं. 10
7. मिश्रा, नितेश कुमार, भीमबेटका के कुछ विशिष्ट शैल चित्र, International Journal of Advances in Social Sciences 2014, पृ. सं. 2
8. गोस्वामी, राकेश, स्मार्ट कला रिवीजन नोट्स, गोस्वामी पब्लिकेशन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, 2020, पृ. सं. 4
9. सिंह, रीटा, NVS-TGT नवोदय विद्यालय समिति कला, अरिहन्त पब्लिकेशन (इण्डिया) लिमिटेड, पृ. सं. 3
10. गुप्त, जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिसिंग हॉउस, दिल्ली, 1960. पृ. सं. 453

चित्र सूची

1. चित्र संख्या-1 गुप्त, जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 1960. पृ. सं. 594
2. चित्र संख्या-2 गुप्त, जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 1960, पृ. सं. 600
3. चित्र संख्या-3 प्रताप, रीता (वैश्य), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 37वां संस्करणः 2022, पृ. सं. 19
4. चित्र संख्या-4 प्रताप, रीता (वैश्य), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 37वां संस्करण, 2022, पृ.सं. 20
5. चित्र संख्या-5 गुप्त, जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, 1960, पृ.सं. 507